प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 5 (2019–20)

हिन्दी–अ कोड (002)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक – 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड – क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

भोजन सम्बन्धी भूलों में सबसे बड़ी भूल बिना भूख खाना है। बिना भूख खाना अपने शरीर के साथ अपराध करना है। प्रायः लोगों का विचार है कि अधिक खाने से शरीर हृष्ट–पुष्ट होता है और कम खाने से शरीर कमजोर हो जाता है। यह धारणा बिल्कुल गलत है और स्वास्थ्य के नियमों का ज्ञान न होने का सूचक है। सभ्य समझी जाने वाली जातियों में यह प्रथा अधिक प्रचलित है। यही कारण है कि उनमें अपच का रोग बहुत अधिक होता है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो भूख न लगने पर भी भोजन करता है। अन्य कोई प्राणी बिना तेज भूख लगे भोजन नहीं करता। कई सहस्त्र व्यक्ति भोजन केवल एक बार करते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति केवल अभ्यासवश भोजन करते हैं और प्रायः उसे अपना कर्त्तव्य समझते हैं। भोजन को कभी कर्त्तव्य नहीं समझना चाहिए और न ही उसका अभ्यास डालना चाहिए। भोजन ऐसा होना चाहिए जो संतुलित हो, ताजा हो और शीघ्र पच जाने वाला हो। ऐसा भोजन करने से हम दीर्घायु, स्वस्थ तथा नीरोग होते हैं।

1. अपच का रोग किनमें अधिक पाया जाता है? 2
   उत्तर : सभ्य जातियों में अपच का रोग अधिक पाया जाता है।
2. भोजन कैसा होना चाहिए? 2
   उत्तर : भोजन ऐसा होना चाहिए जो संतुलित हो, ताजा हो और शीघ्र पच जाने वाला होना चाहिए।
3. भोजन के सम्बन्ध में मनुष्य और अन्य प्राणियों में क्या अन्तर है? 2
   उत्तर : मनुष्य भूख न लगने पर भी भोजन करता है जबकि अन्य प्राणी तेज भूख लगने पर ही भोजन करते हैं।
4. 'स्वस्थ तथा नीरोग होते हैं' रेखांकित शब्द का अर्थ लिखिए। 1
   उत्तर : रोग से रहित।
5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
   उत्तर : संतुलित भोजन निरोगी काया।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7

अरहर कल्लों से भरी हुई फलियों से झुकती जाती है,
उस शोभासागर में कमला–ही–कमला बस लहराती है।
सरसों दानों की लड़ियों से दोहरी–सी होती जाती है,
भूषण का भार सँभाल नहीं सकती है कटि बलखाती है।
है चोटी उसकी 'हिरनखुरी' के फूलों से गुँथ कर सुन्दर,
अन–आमंत्रित आ पोलंगा है इंगित करता हिल–हिलकर।
हैं मसें भींगती गेहूँ की तरुणाई फूटी आती है,
यौवन में माती मटर बेलि अलियों से आँख लड़ाती है।
लोने–लोने वे घने चने क्या बने–ठने इठलाते हैं,
हौले–हौले होली गा–गा घुँघरु पर ताल बजाते हैं।
हैं जलाशयों के ढालू भीटों पर शोभित तृण शालाएँ,
जिनमें तय करती कनक वरण हो जाग बेलि–अहिबालाएँ।
है कंद धरा में दाब कोष ऊपर तक्षक बन झूम रहे,
अलसी के नील गगन में मधुकर दृग–तारों से घूम रहे।
मेथी में थी जो विचर रही तितली वो सोए में सोई,
उसकी सुगंध–मादकता में सुध–बुध खो देते सब कोई।

1. अरहर किस कारण से झुकी जा रही है? 2
   उत्तर : अरहर फलियों में दाने आ जाने के कारण झुकी जा रही है।
2. सरसों की कमर क्यों बल खा रही है? 2
   उत्तर : सरसों की कमर फली रूपी आभूषणों का भार न सँभाल पाने के कारण बल खा रही है।
3. 'मधुकर दृग–तारों से घूर रहें' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है? 1
   उत्तर : उपमा अलंकार।

4. लोने–लोने से घने चने बन–ठनकर क्या गा–गाकर ताल बजा रहे हैं? 1

उत्तर : लोने–लोने से घने चने बन ठनकर धीरे–धीरे होली गा–गाकर घुँघरु पर ताल बजा रहे हैं।

5. मेथी और सोए की सुगंध का सब पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? 1

उत्तर : मेथी और सोए की सुगंध की मादकता में सब लोग सुध–बुध खो रहे हैं।

अथवा

पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले,
पुस्तकों में है नही छापी गई उसकी कहानी।
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की जुबानी,
अनगिनत राही गए इस राह से उनका पता क्या।
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है।
खोल इसका अर्थ पंथी, पंथ का अनुमान कर ले,
यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना।
जब असंभव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी।
सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना।
हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर खड़ा है।
तू इसी पर आज अपने चित्र का अवधान कर ले,
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

1. बटोही से चलने के पहले क्या करने को कहा जा रहा है?

उत्तर : बटोही से चलने के पहले बाट (रास्ता) की पहचान करने को कहा जा रहा है।

2. 'पैरों की निशानी' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : पैरों की निशानी से कवि का आशय है–मार्गदर्शक चिन्ह।

3. 'विश्वास' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

उत्तर : 'वि'–उपसर्ग 'श्वास'–मूल शब्द।

4. पंथी की यात्रा कैसे सरल हो सकती है?

उत्तर : जब वह कठिन या सरल मार्ग का विचार करे तब सामने वाले मार्ग पर चल दे।

5. इस राह से कितने राही गये?

उत्तर : इस राह से अनगिनत राही गये हैं।

खण्ड – ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 7

1. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

परिक्रमा, निरादर, कुख्यात

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	परि	क्रमा
2.	निर्	आदर
3.	कु	ख्यात

2. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

बेकारी, घटिया, गाड़ीवान

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	बेकार	ई
2.	घट	इया
3.	गाड़ी	वान

3. किन्हीं तीन शब्दों के विग्रह करके समास का नाम लिखिए– 3

नीतिनिपुण, प्रतिक्षण, चतुर्भुज, देवासुर

उत्तर :

	विग्रह	समास का नाम
1.	नीति के निपुण	तत्पुरुष
2.	प्रत्येक क्षण	अव्ययी भाव
3.	चार भुजाएँ हैं जिनकी (विष्णु)	बहुव्रीहि
4.	देव और असुर	द्वंद्व

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

1. अर्थ के आधार पर किन्हीं दो वाक्यों में भेद लिखिए–2

1. यदि वह आता तो मैं घर मिलती।

उत्तर : संकेतवाचक

2. आप अपना काम देखें।

उत्तर : आज्ञावाचक

3. कितना समय हो गया।

उत्तर : प्रश्नवाचक

2. निर्देशानुसार किन्हीं दो वाक्यों में परिवर्तन करके लिखिए– 2

1. शरीर के नष्ट होने पर आत्मा नष्ट हो जाती है। (निषेधवाचक में)

उत्तर : शरीर के नष्ट होने पर आत्मा नष्ट नहीं होती है।

2. भारत ने एक दिवसीय क्रिकेट का विश्वकप जीत लिया। (विस्मयादिवाचक में)

उत्तर : वाह! भारत ने एक दिवसीय क्रिकेट का विश्वकप जीत लिया।

3. यदि किसान समय पर फसल बोता तो अच्छी उपज मिलती। (विधानवाचक में)

उत्तर : समय पर फसल बोने से किसान को अच्छी उपज मिलती है।

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए– 4

1. प्रीति–नदी में पाऊँ न बोरयो।
   उत्तर : रूपक अलंकार
2. गंगा तेरा नीर अमृत सम उत्तम है।
   उत्तर : उपमा अलंकार
3. हैं किनारे कई पत्थर पी रहे चुपचाप पानी।
   उत्तर : मानवीकरण अलंकार
4. सब स्वाँसों की स्वाँस में।
   उत्तर : अनुप्रास अलंकार
5. सिर फट गया उसका वहीं मानो अरुण रंग का घड़ा।
   उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

खण्ड – ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

तिब्बत की जमीन बहुत अधिक छोटे–बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा मठों (विहारों) के हाथ में हैं। अपनी–अपनी जागीर में हरेक जागीरदार कुछ खेती खुद भी कराता है, जिसके लिए मजदूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इंतजार देखने के लिए वहाँ कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। वह बहुत प्रेम से मिले, हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी ख्याल करना चाहिए था।

1. तिब्बत की जागीर–व्यवस्था के विषय में बताइए? 2
   उत्तर : तिब्बत की सारी जमीन छोटे–बड़े जागीरदारों में बँटी हुई है। इन जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा बौद्ध मठों के हाथ में है। हर एक जागीरदार अपनी–अपनी जागीर में खेती कराता है। उसके मजदूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का प्रबंध देखने के लिए कोई भिक्षु भेजा जाता है। जागीर के आदमियों के लिए वह राजा के समान होता है।
2. शेकर की खेती के भिक्षु का व्यवहार कैसा था? 2
   उत्तर : शेकर की खेती के भिक्षु (नम्से) बड़े विनम्र और सज्जन तथा स्नेही थे। वे लेखक से बड़े प्रेम से मिले। यद्यपि उनसे मिलते समय लेखक भिक्षु भेष में था, फिर भी उन्होंने लेखक का पूरा सम्मान किया।
3. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है, इसके लेखक का नाम बताइए। 1
   उत्तर : पाठ–ल्हासा की ओर, लेखक–राहुल सांकृत्यायन।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. 'स्वतंत्रता सहज नहीं मिलती, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है' – 'दो बैलों की कथा' पाठ के आधार पर लिखिए। 2
   उत्तर : पाठ को पढ़ने से ज्ञात होता है कि अपनी खोई आजादी को हासिल करने के लिए हीरा–मोती को लंबी लड़ाई लड़नी पड़ती है, यहाँ तक कि उनकी जान को जोखिम हो जाता है। गया के घर से भागना, दुबारा भागने पर पकड़े जाना, फिर भागना, साँड से लड़ाई करना, काँजीहौस में बंदी होना, हफ्तों भूखे–प्यासे रहना, बधिक के हाथों नीलाम होना और अंत में मुक्ति पाने से लगता है कि स्वतंत्रता के लिए लंबी लड़ाई लड़नी पड़ती है।
2. जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है– वाक्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए। 2
   उत्तर : इस वाक्यांश में लेख ने व्यंग्य किया है। जूते का प्रतीकार्थ है–नीच या तुच्छ प्राणी और टोपी से आशय है–सम्मानित व्यक्ति, ऊँचे लोग। इस वाक्यांश का आशय है नीच और तुच्छ प्राणी अपने धन और थल–बल से सदा गुणी लोगों से अधिक महत्व पाते रहे हैं।
3. तिब्बत की जलवायु भारत से भिन्न है, या तिब्बत की धूप की क्या विशेषता है? 2
   उत्तर : तिब्बत की जलवायु भारत से भिन्न है। जिस स्थान पर धूप होती है वहाँ कड़ी गर्मी पड़ती है, जबकि जहाँ छाया होती है वहाँ बर्फ–सी ठंड होती है। इसके अलावा तिब्बत पर्वतीय क्षेत्र है।
4. हीरा–मोती ने कांजी हौस में बंद जानवरों का जीवन कैसे बचाया? 2
   उत्तर : हीरा और मोती ने देखा कि कांजीहौस में बहुत–से जानवर बंद हैं जो भोजन–पानी के अभाव में अधमरे हो गए हैं। दिनभर चारा न मिलने से क्रोधित हीरा ने दीवार गिरानी शुरु की। हीरा और मोती के परिश्रम से दीवार गिर गई। यह देख घोड़ियाँ, भैंसे, बकरियाँ भाग गई। मोती ने सींग मारकर गधों को भी वहाँ से भगा दिया। इस तरह हीरा और मोती ने बंद जानवरों का जीवन बचा लिया।
5. प्रेमचंद फटा जूता भी ठाठ से क्यों पहनते हैं? स्पष्ट कीजिए। 2
   उत्तर : प्रेमचंद सहज थे। उन्होंने गरीबी को स्वीकार कर लिया था। इसके लिए उनके मन में हीनता की भावना नहीं थी। इसलिए वे अपनी गरीबी को छिपाना

भी नहीं चाहते थे। न ही इसे अपनी बड़ी कमी मानते थे। इसलिए गरीबी के बावजूद ठाठ से जिए।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली!
तेरा नभ–भर में संचार,
मेरा दस फुट का संसार!
तेरे गीत कहावें वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह!
देख विषमता तेरी–मेरी,
बजा रही तिस पर रणभेरी!
इस हुंकृति पर,
अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?
कोकिल बोलो तो!
मोहन के व्रत पर,
प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!
कोकिल बोलो तो!

1. कोकिल और कवि की स्थिति में क्या अन्तर है? 2

उत्तर : कोकिल और कवि की मनः स्थिति में बहुत अंतर है। कवि कारागार में बंदी है, जबकि कोयल खुले आकाश में उड़ने के लिए स्वतंत्र है। कवि दस फुट की तंग कोठरी में कैद हैं, जबकि कोयल हरी डालियों पर झूम रही है। कोयल के गीतों की सभी प्रशंसा करते हैं, जबकि कवि आँसू बहा रहा है।

2. कोयल और (कैदी) कवि के बीच क्या समानता है? 2

उत्तर : कोयल और (कैदी) कवि के बीच यह समानता है कि दोनों अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के कारण दुखी हैं। कोयल अपनी जोशीली ध्वनि से स्वतंत्रता की ज्वाला धधका रही है तो कवि का दर्द उसकी रचनाओं में छिपा है वह अपनी रचनाओं से जोश भर रहा है।

3. 'कृति से और कहो क्या कर दूँ'। पंक्ति में कौन–सा अलंकार है? 1

उत्तर : अनुप्रास अलंकार है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. मृदुल वैशव की रखवाली–सी, कोकिल बोलो तो! भाव स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : कोयल का स्वर अत्यंत मधुर और मृदुल है। प्राचीन समय में भारत की गणना वैभवशाली देशों में की जाती थी। अंग्रेजों के अत्याचारपूर्ण शासन के बाद भी यहाँ वैभव शेष है। कोयल भी उसी मधुर वैभव की रखवाली करने वाली है। जेल के आस–पास कोयल अपना मृदुल वैभव (मधुर स्वर) क्यों लुटा रही है। कोयल कुछ तो बताओ।

2. कृष्ण के प्रेम में पागल गोपिका गले में और सिर पर क्या धारण करना चाहती हैं और क्यों? 2

उत्तर : कृष्ण के प्रेम में पागल गोपिका गले में गुंजों की माला और सिर पर मोर मुकुट धारण करना चाहती हैं क्योंकि वह कृष्ण का प्रेम पाना चाहती है।

3. 'वाख' का क्या अर्थ है? इस कविता में 'रस्सी' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? 2

उत्तर : 'वाख' अनुभव के आधार पर लिखी गई कविता को कहते हैं। यहाँ 'रस्सी' जीवन जीने के साधनों को और 'नश्वर आयु' को कहा गया है।

4. काले माथे वाली चिड़िया अपने सफेद पंखों से क्या करती है? 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता के आधार पर उसकी मानसिकता स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : काले माथे वाली चिड़िया अपने सफेद पंखों की सहायता से जल की सतह पर जोर से झपट्टा मारती है। वह जल के अंदर तैरती एक उजली चंचल मछली को चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है। वह उड़ते–उड़ते शिकार करती है।

5. 'मेघ आए' कविता में आँधी किसकी प्रतीक है? वह किस तरह दौड़ने लगीं? 2

उत्तर : 'मेघ आए' कविता में आँधी स्वागत करने वाली उत्साही युवती का प्रतीक है। वह घाघरा उठाये भाग. –भागकर मेघों का स्वागत कर रही है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 4

1. उजड़े हुए गाँव के लोगों को कैसे बसाया जाना चाहिए? 'माटी वाली' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : उजड़े हुए गाँव के लोगों को बसाने के लिए नए गाँवों में स्थान दिए जाने चाहिए। उनकी रोजी–रोटी के लिए भी उचित व्यवस्था करनी चाहिए। पहले गाँव के लोगों को उचित तरीके से बसाने का इंतजाम होना चाहिए, बाद में बाँध बनाने चाहिए।

2. डराने–धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है। 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : यह बिल्कुल सत्य है कि डराने–धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की सहजता से सबको राह पर लाया जा सकता है। इस पाठ के अनुसार एक चोर दीवार काटकर हवेली में घुस आया। उसी कमरे में माँ जी सोई हुई थीं। आहट सुनकर उनकी आँखें खुल गई। उन्होंने पूछा 'कौन'? जबाव मिला 'चोर'। माँ जी ने उसे पानी लाने का आदेश दिया। चोर पानी लेकर आ रहा था तो चौकीदार ने उसे पकड़ लिया और उनके सामने लाया गया। माँ जी ने लोटे का आधा

पानी पीकर आधा चोर को पिला दिया और कहा, 'आज से हम माँ–बेटे हुए। अब तू चोरी कर या खेती। चोर ने चोरी करना छोड़ खेती करना शुरु कर दिया। यदि उसे मारा पीटा जाता तो वह न सुधरता।

3. 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है? 2

उत्तर : जीवन में उन लोगों को श्रद्धाभाव से देखा जाता है जो–

1. अपने स्वार्थ तक ही सीमित न रहकर दूसरों के बारे में भी सोचते हैं।
2. जो दूसरों की भलाई के लिए अपना धन, समय, श्रम आदि लगाने से नहीं घबराते।
3. जो घर–परिवार के अलावा समाज के अन्य लोगों को भी उचित राय देते हैं। लेखिका की माँ ऐसा ही किया करती थीं।
4. जो दूसरों की गोपनीय बातों को सार्वजनिक नहीं करते हैं उनकी गोपनीयता बनाए रखते हैं। खुद लेखिका की माँ इसका उदाहरण थीं।

खण्ड – घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200–250 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(1) समाज और कुप्रथाएँ

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • समाज की संस्थापना • समाज विरोधी तत्व एवं कुप्रथाएँ • कुप्रथाएँ सामाजिक जीवन की बेडियाँ • उपसंहार

(2) प्रातःकालीन भ्रमण

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ • प्राणदायिनी ऑक्सीजन की प्राप्ति • प्रातःकाल प्राकृतिक सुन्दरता • उपसंहार

(3) आतंकवाद

संकेत–बिन्दु : भूमिका • आतंकवाद का अर्थ • भारत में आतंकवाद • कश्मीर में आतंकवाद • आतंकवाद फैलने के कारण • समाधान • उपसंहार

उत्तर :

(1) समाज और कुप्रथाएँ

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • समाज की संस्थापना • समाज विरोधी तत्व एवं कुप्रथाएँ • कुप्रथाएँ सामाजिक जीवन की बेडियाँ • उपसंहार

1. **प्रस्तावना–** हम जहाँ रहते हैं, जिनके बीच रहते हैं, वह समाज है। समाज मनुष्यों से मिल–जुलकर रहने का स्थान है। व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता। आज व्यक्ति जो कुछ भी, वह समाज के कारण है। बिना समाज के व्यक्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सभ्यता, संस्कृति भाषा आदि सब समाज की देन है। समाज में फैली हुई कुरीतियाँ या कुप्रथाएँ भी समाज के विकार के कारण है।
2. **समाज की संस्थापना–** समाज की संस्थापना मनुष्य के पारस्परिक विकास के लिए हुई है। मनुष्य इस कारण ही आपसी सहयोग कर सका है और ज्ञान तथा विकास की धारा को अक्षुण्ण बनाए रख सकता है। मनुष्य के समूचे विकास का आधार समाज है। मनुष्य में सद् तथा असद् प्रवृत्तियों में संघर्ष चलता रहता है। वह असद् प्रवृत्ति वाले मनुष्य समाज के अगुआ बन जाते हैं और सद प्रवृत्ति वालों को वे तरह–तरह के उपाय व नियम–उपनियम बनाकर परेशान करने लगते हैं। वे अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए नियमों को तोड़ने लगे और मानव जाति के सामने नवीन सामाजिक व्यवस्था को पेश करने लगे, जो समाज की विसंगतियों और अंतविरोधों में संबंध रखने के कारण समाज में व्यवधान पैदा करने वाली सिद्ध हुई। इसी से कुरीतियों को जड़ पकड़ने का अवसर मिला। कुरीतियों या कुप्रथाओं को हवा देने का काम धर्म के पुरोधाओं ने शुरु किया। वे धर्म के नाम पर अंधविश्वास फैलाने लगे और परस्पर भेदभाव की दीवार खड़ी करके मानव को विरोधी बनाने में सफल हुए हैं।
3. **समाज विरोधी तत्व एवं कुप्रथाएँ–** समाज विरोधी तत्वों ने अपनी शक्ति को बढ़ावा दिया और सत्यमार्ग से व्यक्तियों को हटाने में सफलता प्राप्त की। इस तरह समाज कुरीतियों से घिरने लगा। जाति का आधार जो कर्म के अनुसार था, अब जन्म के अनुसार हो गया।

   कभी विवाह करना अपराध था। विधवा को उपेक्षित जीवन जीना पड़ता था। वह शृंगार नहीं कर सकती थी, साधारण कपड़े पहनती थी, किसी शुभ कार्य में सम्मिलित भी नहीं हो सकती थी। आज विधवा विवाह होने लगे हैं, परन्तु गाँवों में विधवाओं को आज भी उपेक्षित जीवन जीना पड़ रहा है। बाल विवाह कानूनन अपराध है।

   इसी तरह श्राद्ध कर्म, मृत्यु–भोज, सती प्रथा, घूंघट प्रथा, स्त्रियों को शिक्षित न होने देना, जादू–टोने, शकुन–अपशकुन विचार आदि अनेक ऐसी कुप्रथाएँ हैं जो समाज को निरन्तर तोड़ रही है। यह सब हमारी भयत्रस्य मनोवृत्ति का परिणाम है।
4. **कुप्रथाएँ सामाजिक जीवन की बेडियाँ–** वे विचार या कुप्रथाएँ जो जीवन और सामूहिक जीवन को आगे बढ़ाने से रोकती हैं, हमें त्याग देनी चाहिए। लेकिन

विवेकशील वर्ग आज अशिक्षितों की अपेक्षा ऐसी प्रथाओं से घिरा हुआ है, वह कुप्रथाओं को पानी दे रहा है। उसका कारण है कि वह शिक्षित होने पर भी भयमुक्त नहीं हो सका है। दिन पर दिन समाज अर्थलोलुपता के चंगुल में फँसता जा रहा है।

5. **उपसंहार–** कुप्रथाओं के विरोध में जो संस्थाएँ काम कर रही हैं, वे भी प्रदर्शन से ज्यादा कुछ नहीं कर रही हैं। क्योंकि वे स्वयं कुप्रथाओं का शिकार है। उनमें सत्य को जीने का साहस नहीं है। इस दिशा में सबको एकजुट होकर अपने लिए प्रयास करना चाहिए और कुप्रथाओं का डटकर विरोध करना चाहिए जिससे इन कुप्रथाओं का अस्तित्व नगण्य हो जाए। यह सब लोगों में जागरुकता फैलाकर ही हो सकता है। यह अब चरित्र स्थापना के लिए किए गए प्रयत्नों से ही संभव होगा।

(2) प्रातःकालीन भ्रमण

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ • प्राणदायिनी ऑक्सीजन की प्राप्ति • प्रातःकाल प्राकृतिक सुन्दरता • उपसंहार

1. **प्रस्तावना–**

प्रातःकाल सैर को जाओ।
बिन पैसे के स्वास्थ्य बनाओ।

किसी कवि ने ठीक कहा है कि प्रातःकाल सैर करने से स्वास्थ्य सुधरता है। प्रातःकाल उठने के लिए आवश्यक है रात को शीघ्र सो जाये। "Early to Bed and Early to Rise" का सिद्धान्त अपनाएँ। प्रातःकाल भ्रमण शरीर में नवचेतना व स्फूर्ति का संचार करता है। शारीरिक और मानसिक दोनों ही रूपों में यह स्वास्थ्यवर्धक है। चिकित्सा शास्त्रियों की राय है कि बीमार, वृद्ध तथा अन्य लाचार व्यक्ति यदि व्यायाम के अन्य रूपों को नहीं अपना पाते वे प्रातःकाल की सैर से अपना काम चला सकते हैं। इस सैर से बिगड़े हुए आंतरिक अवयवों को सही ढंग से कार्य करने में बहुत मदद मिलती है।

2. **प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ–** शरीर की माँसपेशियाँ प्रातःकालीन भ्रमण से कार्यरत हो जाती हैं तथा रक्त–संचार सामान्य हो जाता है। इसके फलस्वरूप मनुष्य आंतरिक रूप से अच्छे स्वास्थ्य एवं चैतन्यता का अनुभव करता है। उच्च रक्त चाप, पेट की समस्याएँ, मधुमेह आदि रोगियों को चिकित्सक खूब सैर करने की सलाह देते हैं। मधुमेह को नियंत्रित करने की तो यह रामबाण औषधि है।

3. **प्राणदायिनी ऑक्सीजन की प्राप्ति–** शहरों में प्रातःकालीन भ्रमण के लिए जगह–जगह हरे–भरे पेड़–पौधों से युक्त पार्क बनाए गए हैं। जहाँ पार्क की सुविधा नहीं होती है वहाँ लोग सड़कों के किनारे लगे वृक्षों के समीप से होकर टहलते हैं। गाँवों में इस प्रकार की समस्या नहीं होती है।

सभी जानते हैं कि हमारे लिए ऑक्सीजन बहुत महत्त्वपूर्ण है। दिन के समय तो यह मोटरगाड़ियों आदि के धुएँ से प्रदूषित हो जाती है। अतः प्रातःकाल सर्वथा उपयुक्त होती है। प्रातः भ्रमण से मनुष्य अधिक मात्रा में ऑक्सीजन ग्रहण करता है। इससे शरीर में उत्पन्न विकार स्वतः ही दूर हो जाते हैं।

4. **प्रातःकाल प्राकृतिक सुंदरता–** सुबह के समय प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। उगते सूरज की लालिका समस्त अंधकार को मिटा देती है। वृक्षों पर बैठी कोयल का मधुर गान सभी के मन को मोह लेता है। आकाश में स्वच्छंद विचरण करते एवं चहचहाते पक्षियों का समूह नवीनता का संदेश देता है। सुबह की मंद–मंद बहती सुगंधित हवा शरीर को नई ताजगी प्रदान करती है। सुबह के समय हरी–भरी घास पर ओस की बूँदें ऐसी प्रतीत होती है जैसे प्रकृति ने उन बूँदों के रूप में मोती बिखेर दिए हो।

बूढ़े, बच्चे व युवा सभी वर्ग के लोग यहाँ दिखाई देते हैं। लोग भ्रमण के साथ उनके विषयों पर बातचीत करते हैं जिससे नई जानकारियों के साथ परस्पर मेल भी बढ़ता है। बच्चे अनेक प्रकार के खेल का आनंद उठाते हैं। प्रातःकालीन शुद्ध व सुगंधित वायु तथा विभिन्न प्रकार के खेल उनके शारीरिक व मानसिक विकास में सहायक होते हैं। कुछ लोग प्रातःभ्रमण को समय की बरबादी मानकर उसे जीवन भर टाल देते हैं। ऐसे लोग प्रकृति के कई मूल्यवान उपहारों से वंचित हो जाते हैं।

5. **उपसंहार–** इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रातःकालीन भ्रमण बच्चे, बूढ़े व युवा सभी के लिए अनिवार्य है। यह हमारे शरीर में नई स्फूर्ति, नई चेतना व नया उल्लास प्रदान करता है। सुबह की शुद्ध व सुगंधित वायु शरीर के अनेक विकारों को दूर करती हैं।

प्रातःकालीन मनोरम दृश्य अत्यंत सुखद प्रतीत होता है। इस प्रकार दिन की शुरुआत मनुष्य को अधिक स्वस्थ एवं प्रसन्न रखती है। जिससे वह अपनी क्षमताओं को पूर्ण रूप से उपयोग कर सकता है।

(3) आतंकवाद

संकेत–बिन्दु : भूमिका • आतंकवाद का अर्थ • भारत में आतंकवाद • कश्मीर में आतंकवाद • आतंकवाद फैलने के कारण • समाधान • उपसंहार

1. **भूमिका–**

'जहाँ भी जाता हूँ वीरान नजर आता है,

खून में डूबा हर मैदान नजर आता है।
कैसा है वक्त कि दिन के उजले में भी,
नहीं इंसान को इंसान नजर आता है।'

कवि की उपर्युक्त पंक्तियाँ समाज में बढ़ते आतंकवाद की ओर संकेत करती हैं। आतंकवाद एक अत्यंत भयावह समस्या है जिससे पूरा विश्व जूझ रहा है।

2. **आतंकवाद का अर्थ–** भय या दहशत। ऐसी अमानवीय तथा भय उत्पन्न करने वाली ऐसी गतिविधि जिसका उद्देश्य निजी स्वार्थपूर्ति या अपना दबदबा बनाए रखने के उद्देश्य से या बदला लेने की भावना से किया गया काम हो–आतंकवाद कहा जाता है। आज विश्व में जिस प्रकार आतंकवाद फल–फूल रहा है, उसके पीछे सांप्रदायिकता धर्मांधता एवं कट्टरता एक प्रमुख कारण है। विश्व में कुछ ऐसे संगठन हैं, जो युवाओं की दिशा भ्रमित करके, उन्हें धर्म, राजनीति या सांप्रदायिकता के नाम पर गुमराह करके उनके ह्रदय में क्रूरता, कट्टरता तथा घृणा का जहर घोलकर बेगुनाहों का खून बहाने के लिए प्रेरित करने में सफल हो जाते हैं।

3. **भारत में आतंकवाद–** भारत शांतिप्रिय देश है। यहाँ बुद्ध, महावीर एवं गाँधी जैसे अहिंसावादी महापुरुष पैदा हुए हैं। आतंक की प्रवृत्ति भारत की भूमि से मेल नहीं खाती परन्तु दुर्भाग्य पिछले दो दशकों से भारत आतंकवाद की लपेट में रहा है।

4. **कश्मीर में आतंकवाद–** कश्मीर का आतंकवाद आज नासूर बन गया। वहाँ के बच्चे स्कूल नहीं जा सकते। घर में बुजुर्ग एवं महिलाएँ भी सुरक्षित नहीं। आतंकवादी कभी मुम्बई में हमले करते हैं तो कभी कोलकाता में बम–विस्फोट करते हैं, कभी गुजरात के अक्षरधाम मंदिर में, तो कभी कश्मीर में मस्जिद में खून खराबा किया करते हैं। 11 जुलाई, 2006 को कश्मीर एवं मुम्बई में 13 धमाकों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में आतंकवाद अपनी जड़ें जमा चुका है।

ओसामाबिन लादेन ने अफगानिस्तान की भूमि पर रहकर अमेरिका के तीन टावरों को पलभर में भूमिसात कर दिया। अमेरिका को भी उसे पकड़ने में दस साल से ज्यादा लगे। आज भी उस आतंकी का नेटवर्क पूरे विश्व में फैला हुआ है।

5. **आतंकवाद फैलने के कारण–** आतंकवाद फैलने का मुख्य कारण है– धार्मिक कट्टरता। ओसामा बिन लादेन, तालिबान, सीरिया, पाकिस्तान, फिलीस्तीन इन सबके पीछे साम्प्रदायिक शक्तियाँ काम कर रही हैं। ये आतंकवादी आधुनिक तकनीक से लैस विध्वंस की ढेरों सामग्री रखते हैं। भारत में आतंकवाद फैलने का एक अन्य कारण है–क्षेत्रवाद और राजनीतिक स्वार्थ। वोट के भूखे राजनेता जानबूझकर आतंकवाद को आश्रय देते हैं।

6. **समाधान–** आतंकवाद को मिटाने के लिए दृढ़ संकल्प तथा कठोर कार्यवाही आवश्यक है। भारत को आतंकवाद मिटाने के लिए आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को समूल नष्ट करना होगा। जिस दिन अमेरिका की तरह पूरा विश्व दृढ़ संकल्प कर लेगा और आतंकवाद को करो या मरो का प्रश्न बना लें और विश्व के बड़े–बड़े देश भारत का सहयोग करें तो आतंकवाद को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

7. **उपसंहार–** आतंकवाद जिस तरह से पूरे संसार में अपनी जड़े फैला रहा है, यह गंभीर चिंता का विषय है। अगर इस पर जल्द काबू नहीं किया गया तो, आने वाली पीढ़ी के लिए यह बड़ा खतरा पैदा कर सकता है।

इसलिए आतंकवाद की समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए हम सभी को एकजुट होकर प्रयास करने की जरूरत है।

12. बाल दिवस पर आपके विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम हुआ तथा मेला लगा। इसका वर्णन करते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए। 5

उत्तर :

214, कमला मार्ग,
जयपुर
दिनांक– 11 सितंबर, 2019

पूज्य पिताजी!
चरण स्पर्श!

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। यहाँ माता जी और सभी सकुशल हैं। मेरी पढ़ाई भी अच्छी हो रही है। पिताजी! आपको बताते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि मेरे विद्यालय में बाल दिवस के अवसर पर अनेक रंगारंग कार्यक्रम हुए तथा बाल मेला भी लगा।

विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने 15 दिन पूर्व ही इस कार्यक्रम की घोषणा कर दी थी। इस अवसर पर बच्चों के ढेर सारे उत्साहवर्धक कार्यक्रम हुए जिनमें रंगोली प्रतियोगिता, अनेक प्रकार की रेस प्रतियोगिता, विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विज्ञान विषय के तहत बच्चों ने ढेर सारे मॉडल तैयार किए, कुछ बच्चों ने ग्रीटिंग कार्डस एवं पेंटिंग्स बनाईं। इस अवसर पर बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। मैंने भी ढेर सारे ग्रीटिंग कार्डस और 3 पेंटिंग्स बनाईं। प्रधानाचार्य जी ने मुख्य–अतिथि को भी बुलाया था जिन्होंने मेले का उद्घाटन किया। बच्चों के अभिभावक भी आए थे। सभी ने पूरे आयोजन की खूब सराहना की।

मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए बच्चों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की। वास्तव में यह आयोजन सभी के लिए प्रेरणादायी रहा।

शेष शुभ।

आपका सुपुत्र

विशाल

अथवा

आपके विद्यालय से आप शतरंज प्रतियोगिता के लिए जिला–स्तर पर खेलने जा रहे हैं और आप उसमें विशेष योग्यता पाने के लिए सहायता चाहते हैं। अतः प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर एक विशेषज्ञ की नियुक्ति के लिए अनुरोध करें।

उत्तर :

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

संत जयचार्या स्कूल,

नई दिल्ली

विषय– शतरंज खेल विशेषज्ञ हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि मैं इस विद्यालय में कक्षा नवीं–बी का छात्र हूँ। मैं अपने विद्यालय की ओर से जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता के लिए खेलने जा रहा हूँ। वैसे तो विद्यालय में जो शतरंज प्रशिक्षक हैं, अच्छी तरह सिखाते व मार्गदर्शन करते हैं परन्तु मैं विशेष योग्यता पाकर इस प्रतियोगिता में विद्यालय के लिए ट्राफी जीतना चाहता हूँ।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि मेरे लिए कुशल शतरंज प्रशिक्षक की नियुक्ति करने की कृपा करें ताकि मैं अपने इस खेल में अभ्यास के प्रति आश्वस्त हो जाऊँ। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र

पंकज त्रिपाठी

कक्षा IX-बी

दिनांक– 21 अक्टूबर, 2019

13. पोती और दादी के बीच बातचीत करते हुए संवाद लिखिए– 5

उत्तर :

राधा– दादी प्रणाम!

दादी– बेटी राधा! खुश रहो।

राधा– दादी! आज तो मैं सारा दिन घर में रहकर आपसे ढेर सारी बातें करूँगी।

दादी– क्या आज तुम्हारे विद्यालय का अवकाश है?

राधा– जी दादी! आज जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विद्यालय का अवकाश है।

दादी– अच्छी बात है। पहले नहा–धोकर भगवान की पूजा करते हैं फिर फलाहार करेंगे।

राधा– दादी! क्या मुझे भी फलाहार करना है?

दादी– तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी फलाहार कर सकती हो।

राधा– दादी! आज मैं आपसे श्रीकृष्ण जन्म की कहानी सुनूँगी।

दादी– अच्छी बात है, बेटा मैं तुम्हें श्रीकृष्ण जन्म की कहानी जरूर सुनाऊँगी।

अथवा

राजा अपने पिताजी के साथ प्रातः भ्रमण के लिए जाता है। पिता और पुत्र के मध्य हुए वार्तालाप को संवाद के रूप में लिखिए–

उत्तर :

पिताजी– बेटा राजा! जल्दी से उठो और नित्य क्रिया करके मेरे साथ घूमने चलो।

राजा– जी, पिताजी! अभी तैयार होकर आता हूँ।

पिताजी– आ गए, शाबाश! प्रातःकाल भ्रमण करना सेहत के लिए अच्छा होता है।

राजा– जी पिता जी! मैंने देखा है बहुत–से लोग सवेरे घूमने जाते हैं।

पिताजी– चलो, बगीचे में चलकर घूमते हैं।

राजा– बगीचे में क्यों? कहीं और भी तो जा सकते हैं।

पिताजी– बगीचे में हरे–भरे पेड़ हैं, शुद्ध ताजी हवा है, शांत सुंदर वातावरण है। अतः यहाँ घूमना हितकर होगा।

राजा– अच्छी बात है, पिताजी बगीचे में ही घूमने चलते हैं। वहाँ बहुत सारे बुजुर्ग लोग भी घूमने आते हैं। वे व्यायाम करते हैं, प्राणायाम करते हैं।

पिताजी– सुबह–सुबह ताजी हवा में घूमने से मन प्रसन्न हो जाता है। शरीर में स्फूर्ति आ जाती है।

राजा– पिताजी! चलिए बगीचे में घूमने चलते हैं।

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online